वर्त्तमान में नक्सलवाद का स्वरूप

मो० इजहारूल हक*

सारांशः– इस आलेख में नक्सलवाद को समझाते हुए इसके कारणों की चर्चा करते हुए गुण एवं दोष पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही साथ वर्त्तमान में नक्सलवाद की स्थिति पर चर्चा करते हुए इसके प्रभाव की चर्चा की गई।

नक्सलवाद का उद्भव सिलीगुड़ी संभाग के नक्सलबाड़ी में भूस्वामियों व भूमिहीन कृषकों के मध्य संघर्षोपरांत हुआ था। प्रारम्भ में नक्सलवाद आन्दोलन साम्यवाद के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसके तहत् शोषित/उपेक्षित/वंचित वर्ग अपनी शक्ति में पूंजीपतियों, जमींदारों, साहूकारों, शासकों से उनकी सत्ता को हथिया लेते थे। वर्त्तमान समय में नक्सलवादी आन्दोलन अपने मूलभूत सिद्धांतों, उद्देश्य व कार्यप्रणाली से दिग्भ्रमित हो चुका है। यह अपनी हिंसक गतिविधियों से राष्ट्र की आन्तरिक शान्ति, सुरक्षा एवं विकास के मार्ग में आवरोधक बन चुका है। चूँकि वर्तमान में नक्सलवादी आन्दोलन में अत्यधिक हिंसा के शामिल हो जाने से यह आन्दोलन आज हमारे देश की एकता, अखण्डता व सुरक्षा–व्यवस्था पर घातक प्रहार कर रहा है, इसी कारणवश प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य इसी समस्या को उजागर करने का प्रयास करता है।

नक्सलवाद का उदय वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी संभाग के नक्सलबाड़ी गांव में भूस्वामियों एवं भूमिहीन कृषकों के मध्य संघर्षोपरान्त हुआ था। इस आन्दोलन को सी.पी.एम सदस्य चारू मजूमदार व कानू सान्याल ने नेतृत्व प्रदान किया। यह आन्दोलन मूलतः मार्क्सवाद व लेनिनवाद के सिद्धान्तों पर आधारित था, जिसके तहत् शोषित/उपेक्षित वंचित वर्ग अपनी शक्ति से पूंजीपतियों, जमींदारों, साहूकारों, शासकों को शिकार बनाकर राजसत्ता को लूटना अपना अधिकार मानते थे। यह भी कहा जा सकता है कि नक्सलवाद एक विचारात्मक राजनीतिक एवं आर्थिक संघर्ष था, जिसका उद्देश्य तत्कालीन शासक वर्ग की राज सत्ता को उखाड़ फेंकना था।

वर्तमान में नक्सलवादी आन्दोलन अपने मूलभूत सिद्धांतों, उद्देश्यों व कार्यप्रणाली से दिगभ्रमित हो चुका है। यह अपनी हिंसक गतिविधियों से राष्ट्र की

***पीएच०डी०, इतिहास मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार**

आन्तरिक शक्ति, सुरक्षा एवं विकास के मार्ग में एक अवरोधक बन चुका है। इस आन्दोलन में अत्यधिक हिंसा के शामिल हो जाने से वर्तमान परिदृश्य हिंसा, लूटपाट एवं अराजकता का हो गया है। गरीब, दलित, आदिवासी, शोषित एवं कृषक इसके मुख्य रूप से अनुयायी है। वर्तमान समय में देश के 13 से ज्यादा राज्यों में फैल चुकी नक्सलवादी गतिविधियों में कुल 19 हजार प्रशिक्षित नौजवान है। आंधप्रदेश के वारंगल, करीमनगर, नालमला, पालनाड व उत्तरी तेलांगाना में उनका तांडव चलता है। बिहार के 34 जिलों में, झारखण्ड के लगभग एक तिहाई से ज्यादा क्षेत्रों में, मध्य प्रदेश के एक बड़े हिस्से में, उ० प्र० के लगभग 800 गांवों में नक्सली सक्रियता देखने को मिलती है।

नक्सली हिंसा का तांडव उत्तरोत्तर बढ़ता रहा है। इनमें पटवारी और प्रजातन्त्र विशेष रूप से निशाने पर है। अक्टूबर, 2009 के माह में इंस्पेक्टर फ्रांसिस इंदुवर की गला काट कर हत्या कर दी गई, व महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में अक्टूबर, 2009 में ही नक्सलियों द्वारा 18 पुलिस कर्मियों को मार डाला गया है। हाल ही में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पुलिस कैम्प पर हमला करके 22 पुलिस जवानों की हत्या कर दी गई। यदि 2008 व 2009 के आंकड़ों पर दृष्टिपात् करें तो यह पाते हैं कि 2008 में जहां 231 सुरक्षाकर्मी मारे गये, वहीं 2009 में यह संख्या 270 के ऊपर पहुंच गयी थी।

1967 में प्रारम्भ हुई नक्सली तांडव ने अब तक 6000 निरपराधों की बलि ले ली है। वर्ष 2009 में अगस्त के अन्त तक 1405 नक्सली वारदातें हो चुकी थीं, जिसमें 580 व्यक्ति मारे गये हैं। गृहमंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2004 से लेकर 31 अगस्त 2008तक 2281 नागरिक और 821 सुरक्षार्मी नक्सली हिंसा के शिकार हो चुके हैं। अकेले वर्ष 2008 में 1591 माओवादी घटनाएं घटित हुई हैं, जिनमें 721 लोगों के मारे जाने की पष्टि हुई। यही नही झारखण्ड के कई ग्रामों में तो नक्सलियों द्वारा राशन प्रणाली पर कब्जा कर लिया गया है।

वरिष्ठ पत्रकार आर० वी० सिंह ने अतांकवाद और माओवाद दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया है, क्योंकि दोनों का उद्देश्य भारत को खंडित करना है। वर्तमान समय में नक्सली संगठन आतंकी संगठनों की तर्ज पर सक्रिया है और देश के आन्तरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुके हैं। केन्द्रीय गृहमंत्री पी० चिदम्बरम् का तो यह कहना है कि नक्सलवाद जहादी आतंकवाद की तुलना में ज्यादा गम्भीर है।

नक्सली वारदातों के कारण–यदि हम नक्सली वारदातों के कारणों की समीक्षा करें तो यह तथ्य हमारे समक्ष आता है कि वस्तुतः नक्सलवाद के उदय का प्रमुख

कारण सामाजकि, आर्थिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक शोषण से जुड़ा हुआ है। असंतुलित विकास, क्षेत्रवाद, बेरोजगारी एवं शैक्षिक–आर्थिक पिछड़ापन इस क्षेत्र में प्रमुख रूप से आते है। हमारे देश की यह विडम्बना रही है कि यहां विकास की योजनाएं तो बहुत बनती है, लेकिन क्रियान्वयन में बहुत सारी कमियां रह ही जाती हैं। यद्यपि हमारे देश का विकास हुआ है, जी० डी० पी० में भी वृद्धि हुई है परन्तु विकास का लाभ सभी वर्गों को समान रूप से नही मिला है। योजना आयोग ने ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में स्वीकार किया है कि स्वतन्त्रता के 60 वर्ष पश्चात् भी हमारी एक चौथाई से ज्यादा आबादी आज भी गरीब है। देश के कुल सकल घरेलु उत्पाद के 22 प्रतिशत पर औद्योगिक घरानों का ही नियंत्रण है। राज्य के तन्त्र आदिवासियों को न तो आजीविका सुलभ करा पा रहा है और ना ही उनके राष्ट्रीय संसाधनों को पचा पा रहा है।

माओवाद के कारणों की समीक्षा करते हुए प्रख्यात साहित्यकार महाश्वेता देवी का विचार है कि भारत सरकार की राय में माओवाद देश की सबसे बड़ी समस्या है। इसका निहितार्थ यह है कि किसानों की आत्महत्या, भुखमरी, गरीबी, आर्थिक पिछड़ेपन, खाद्य–संकट और पेयजल संकट को भारत सरकार बड़ी समस्या नहीं मान रही है। उ० प्र० के पूर्व डी० जी० पी० प्रकाश सिंह का विचार है कि यदि 1947 से 2004 के बीच विभिन्न योजनाओं का आंकलन किया जाए तो निष्कर्ष निकलता है कि इसने 6 करोड़ व्यक्तियों को विस्थापित किया, जिसमें 40 प्रतिशत जनजाति के लोग शामिल है। भूमि सम्बन्धी सुधार का लाभ भी देश में आंशिक रूप से ही छोटे कृषकों को मिल सका है।

योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने हाल में ही बयान दिया था कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत सरकार जो खर्च करती है उनमें एक रूपये का 16 पैसा गरीब आदमी तक पहुंचता है। अतः हमारे देश के अनेक क्षेत्र हैं जहां मूलभूत सुविधाएं–शिक्षा, चिकित्सा, बिजली, सड़क और स्वच्छ पानी नहीं है। यही असन्तोष नक्सलवाद का मूल कारण नजर आता है।

नक्सलवाद को रोकने हेतु सरकारी प्रयास

चूंकि सम्पूर्ण देश में नक्सली हिंसा व वारदातों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, वह हमारे देश की एकता, अखण्डता व सम्प्रभूता पर घातक प्रहार कर रहा है इसी कारणवश सरकार इन गतिविधियों को रोकने हेतु सतत् प्रयास कर रही है। सरकार ने "गैर कानूनी गतिविधियां (निवारक) अधिनियम" के तहत् 22 जून, 2009 को भाकपा (माओवादी) पर लगे प्रतिबन्ध का विस्तार, प० बंगाल सहित सम्पूर्ण देश में कर दिया। पिछले कुछ समय में चार प्रमुख नक्सली नेता–माओवादी

के संस्थापक सदस्य कोबाड घंडी को दिल्ली में, लालगढ़ की पीपुल्स कमेटरी के संयोजक क्षत्रधर महतो को बंगाल में नक्सल कमांडर चन्द्रभूषण यादव व प्रमुख नक्सली नेता रवि शर्मा एवं उनकी पत्नी अनुराधा को झारखण्ड से गिरतार किया गया।

देश को नक्सली हिंसा से मुक्त कराने के लिए 'नई पहल' नाम की एक योजना लागू की गयी है, जिसके तीन प्रमुख अंग है विशेष अध्ययन, 2 सशस्त्र बलों की तैनाती, 3 वैकासिफ पहल।

गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट माओवादी प्रभाव 2001 के 56 जिलों की तुलना में 2009 में 231 जिला जिलों तक प्रसारित हो चुका है, जिनमें से 40 जिले अत्यधिक संवेदनशील हैं। इन जिलों में कार्यवाही हेतु केन्द्रीय सुरक्षा बलों की अतिरिक्त बटालियनों की तैनाती का निर्णय लिया गया है। इसके साथ ही भारत सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि सैनिक कार्यवाही के बाद नक्सलियों से मक्त कराये गये क्षेत्रों में विकास कार्यों को अंजाम देने के लिए एक दल तैनात किया जायेगा। इस दल में सामाजिक–आर्थिक सूचकांक अनुसंधानकर्ता, विकास कार्यकर्त्ता, स्वास्थ्य विशेषज्ञ एवं अन्य विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञ होंगे। गृहमंत्रालय की 'नई पहल' के तहत् माओवाद पर अंकुश लगाने के लिए महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में 2 नवम्बर 2009 से 'आपरेशन ग्रीन हंट' प्रारम्भ किया गया। 'आपरेशन ग्रीन इन हंट' शुरू होने के बाद से पुलिस अब तक 1000 कि० ग्रा० से ज्यादा विस्फोटक जब्त कर चुकी है। इतना ही नहीं पुलिस ने उग्रवादियों का एक बंकर, एवं प्रशासनिक व प्रशिक्षण कैम्प भी नष्ट करने में सफलता अर्जिता की है, तथा दो प्रमुख माओवादी नेताओं आंध्रप्रदेश के शक्करपुरी अप्पराराव कोंडल रेड्डी को मार गिराया है। 'आपरेशन ग्रीन इन हंट' की कार्यवाही से भयाक्रान्त होकर भुवनेश्वर जिले में कई वर्षो से सक्रिय 'बांशधारा' नक्सल संगठन के 16 सदस्यों ने एक साथ आत्मसमर्पण कर दिया है।

निष्कर्ष

यद्यपि यह सत्य है कि नक्सलवाद हमारे देश के लिए एक घातक समस्या बन गया है, क्योंकि यह हमारे देश की एकता, अखण्डता पर कुठाराघात कर रहा है; किन्तु यह भी सत्य है कि नक्सलवादी गतिविधियों का कारण हमारे देश की आबादी के एक बड़े वर्ग का विकास से वंचित होना है, जोकि शोषित व प्रताड़ित भी है। प्रख्यात साहित्यकार महाश्वेता देवी ने भी यह स्वीकार किया है कि किसानों की आत्महत्या, भुखमारी, गरीबी, आर्थिक पिछड़ेपन, खाद्य संकट और पेयजल

संकट देश की गम्भीर समस्या है जोकि नक्सलवाद का प्रमुख कारण है। इसी कारणवश नक्सलियों को आदिवासियों और अन्य गरीबों का निरन्तर समर्थन मिल रहा है, क्योंकि ये लोग असहाय हैं और उन पर अत्याचार हो रहे ओर उन्हें उनकी भूमि से भी जबरन बेदखल किया जा रहा है। नक्सलियों के अलावा किसी ने भी उनकी सुधि नहीं ली है। सरकार को नक्सली कार्यवाहियों पर लगाम लगाने के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों के बीच असंतुलित विकास की खाई को कम करने की कोशिश पर ध्यान देना चाहिये। नक्सलवाद से ही सबसे ज्यादा प्रभावित राज्यों में प० बंगाल, झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, और उड़ीसा आते है। इन राज्यों के कई ईलाकों में हालात वाकई बद्तर हैं। विकास क आधार पर इस प्रकार की क्षेत्रीय विषमता को दूर करने के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को सभी क्षेत्रों में पूर्ण तल्लीनता से लागू किया जाना चाहिए जिससे योजनाओं का लाभ उन सभी लोगों को प्राप्त हो सके, जो इसके असली हकदार हैं। जब तक भूख, उत्पीड़न, दबाव, पीड़ा एवं वंचित आबादी रहेगा तब तक असन्तोष और अराजकता, नक्सलवाद जैसे आन्दोलनों को जन्म देती रहेगी; अर्थात् कहा जा सकता है कि नक्सलवाद वहीं पनपता है जहां सामाजिक स्तर के मतभेद गहरे होते हैं। सरकारी तन्त्र को 'मनरेगा' जैसी विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में होने वाले भ्रष्टाचार पर लगाम कसने के लिए खुद को तैयार करना होगा, तभी विकास की रोशनी से महानगर ही नहीं देश का कोना–कोना प्रकाशमान् हो उठेगा जिससे कोई भी नक्सलवाद या आतंकवाद के द्वारा देश की गरीब जनता को अपने लाभ के लिए हिंसा की राह पर अग्रसर नहीं कर सकेगा।

संदर्भ सूची

1. दीक्षित, हृदयनारायण, 'निरंकुश होते नक्सलवादी', दैनिक जागरण, 19 फरवरी 2010।
2. पुंज, बलवीर, 'नक्सली हिंसा की त्रासदी', दैनिक जागरण, 13 अक्टूबर, 2009।
3. गुप्त, संजय, 'नक्सलवाद का नासूर', दैनिक जागरण, 1 नवम्बर, 2009।
4. महाश्वेता, देवी, 'सबसे बड़ी समस्या', दैनिक जागरण, 28 अक्टूबर, 2009।
5. अमर उजाला, 26 अक्टूबर, 2009।
6. सिंह आर० वी० 'संघर्ष विराम का पासा', दैनिक जागरण, 25 फरवरी 2010।

7. गुप्त, संजय, 'नक्सलियों का उत्पात', दैनिक जागरण, 28 अक्टूबर 2009।
8. नैयर, कुलदीप, 'हिंसा की विचारधारा', दैनिक जागरण, 4 नवम्बर 2009।
9. सिंह, प्रकाश, 'नक्सली हिंसा की चुनौती', दैनिक जागरण, 5 नवम्बर 2009।
10. श्रीवास्तव, अशोक, (2009), 'नक्सल समस्या : समाधान की नई पहल', सम–सामयिक घटना–चक, दिसम्बर, 2009।

———